10 नवम्बर 2024
जिनवाणी 52
ISSN 2249-2011

ज्योतिषीय आलोक में भगवान महावीर की निर्वाण तिथि का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन

प्रायः जनसाधारण में यह धारणा है कि भगवान महावीर का जन्म ईसा पूर्व 599 में हुआ। उनका जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को एवं निर्वाण कार्तिकी अमावस्या को हुआ। उनकी आयु लगभग 72 वर्ष थी। मोटे तौर पर प्रारम्भ के 30 वर्ष, गृहवासी रहे, मध्य के 12 वर्ष उन्होंने तपस्या की और अन्त के 30 वर्ष सर्वज्ञ अवस्था में तत्त्व का प्रचार किया।

भूमिका

आज जो भगवान महावीर के निर्वाण की तिथि के सम्बन्ध में मतभेद पाया जाता है, वह मतभेद बुद्ध की निर्वाण तिथि के साथ जोड़ने के कारण उत्पन्न होता है, क्योंकि गौतम बुद्ध की निर्वाण तिथि के सम्बन्ध में अनेक मत हैं। भगवान महावीर की निर्वाण तिथि के सम्बन्ध में लगभग 9 मतभेद पाये जाते हैं, जिनमें से आठ मतभेद तो मात्र गौतम बुद्ध की निर्वाण तिथि से सम्बद्धता के कारण उत्पन्न हुए हैं और एक मत अविश्वसनीय प्रतीत होता है, क्योंकि मतप्रतिपादक स्वयं किसी एक मत पर नहीं है।

दूसरी ओर भगवान महावीर की न केवल निर्वाण की तिथि, अपितु सभी तीर्थंकरों की निर्वाण तिथि और इतना ही नहीं सभी तीर्थंकरों की पूरे पाँचों कल्याणकों की तिथियाँ भी जैनशास्त्रों में निर्विवाद रूप से अंकित हैं। जब हम दूसरे बुद्ध आदि की दृष्टि से महावीर की निर्वाण तिथि को देखते हैं तो हमें कोई एक निश्चित तिथि प्राप्त नहीं होती, जबकि हम अपने जैनग्रन्थों के माध्यम से इसे देखते हैं तो वहाँ कोई विवाद उत्पन्न नहीं होता।

भगवान महावीर के अन्तिम और अर्वाचीन होने से हम उनकी निर्वाण तिथि के सम्बन्ध में भले ही चर्चा कर सकते हैं, लेकिन अन्य 23 तीर्थंकरों की सभी कल्याणक तिथियाँ निर्विवाद रूप से लिखी गई हैं, तो क्यों अकेले महावीर के सन्दर्भ में इतना भ्रम है? यह बिन्दु भी विचारणीय है। यहाँ आप कह सकते हैं कि तिथि तो निश्चित है, किन्तु वर्ष तो निश्चित नहीं है। ऐसे में कहना चाहूँगा कि वर्ष तो शेष 23 तीर्थंकरों का भी निश्चित नहीं है, तो अकेले महावीर के लिए इससे क्या फर्क पड़ता है?

भगवान महावीर के समय की अपेक्षा उनके प्रति श्रद्धा और उनके सिद्धान्तों की प्रामाणिकता अधिक महत्त्वपूर्ण है। प्राचीनता और अर्वाचीनता किसी भी विषय के लिए श्रेष्ठता का आधार नहीं हो सकती। महाकवि कालिदास ने प्रारम्भ में ही सूत्रधार से कहलवाया है–

पुराणमित्येव न साधु सर्वं,
न चापि काव्यं नवमित्यनवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते,
मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः।।

अर्थात् पुरानी होने से ही न तो सभी वस्तुएँ अच्छी होती हैं और न नयी होने से बुरी तथा हेय। विवेकशील व्यक्ति अपनी बुद्धि से परीक्षा करके श्रेष्ठकर वस्तु को अंगीकार कर लेते हैं और मूर्ख लोग दूसरों द्वारा बताने पर ग्राह्य अथवा अग्राह्य का निर्णय करते हैं।

वीर निर्वाण संवत् के आधार पर तिथि निर्णय

एक अन्य महत्त्वपूर्ण बिन्दु यह है कि भगवान महावीर के निर्वाण के समय से वीर निर्वाण संवत् भी

चला आ रहा है, जिसे अनेक कैलेण्डर भी प्रदर्शित करते आ रहे हैं। तदनुसार भी भगवान महावीर के निर्वाण का वर्ष एवं तिथि सुनिश्चित करने में आसानी होती है।

तथापि इस आलेख में ज्योतिषीय परिप्रेक्ष्य में ग्रहों की गति एवं चाल के अनुसार उनके उक्त सम्पूर्ण जीवनवृत्त की प्रमुख तिथियों के सम्बन्ध में ज्योतिषीय परिप्रेक्ष्य में प्रकाश डालने का प्रयास किया जायेगा।

भगवान महावीर का जन्मांग चक्र

श्री यतिवृषभाचार्य के अनुसार भगवान महावीर का जन्म उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हुआ था।[1] तदनुसार उनका जन्मांगचक्र इस प्रकार प्राप्त होता है[2]-

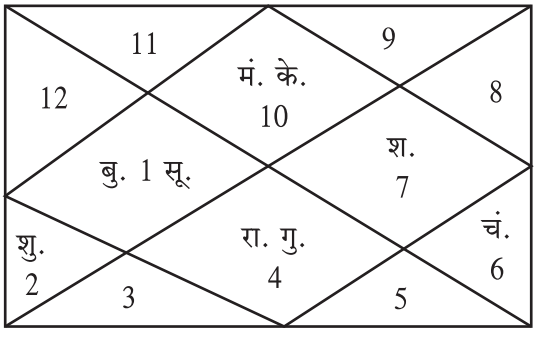

खचित जन्मकुण्डली पर सामान्यरूप से दृष्टिपात किया जाये तो यह निश्चित ही प्रत्येक ज्योतिषी के मुख से स्वत: निकलेगा कि यह कुण्डली अत्यन्त ही श्रेष्ठ है, क्योंकि उपर्युक्त कुण्डली में सभी ग्रह केन्द्र एवं त्रिकोण में स्थित हैं, जो कि ज्योतिषीय फलविधि में सर्वोच्च शुभ लक्षणों के संकेतक हैं।

अन्य प्रकार से देखा जाये तो उपर्युक्त कुण्डली में नवग्रहों में से चार ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु और शनि) उच्च के हैं और एक ग्रह (शुक्र) स्वगृही है। यह भी एक श्रेष्ठ स्थिति को दर्शाता है।

यद्यपि कभी-कभार उच्च ग्रह भी अनिष्टकारक हो जाता है, तथापि यह उस ग्रह की स्थिति पर निर्भर करता है। कहीं वह त्रिक स्थान (6, 8 और 12वें भाव) में तो नहीं है? इत्यादि, परन्तु यहाँ तो सभी उच्च ग्रह केन्द्र के स्वामी बने बैठे हैं।

सर्वप्रथम कुण्डली के केन्द्रीय प्रथम भाव को देखिये, जहाँ मंगल उच्च राशि में स्थित है और साथ में केतु भी है। प्रथम भाव को लग्न भी कहा जाता है, जो शीर्ष स्थान का स्वामी होता है। महावीर लोक में शीर्षस्थ पद को प्राप्त कर चुके हैं, अत: यह प्रथम भाव उनकी ऊर्ध्वमुखी चेतना को दर्शाता है। मंगल अग्निस्वरूप होता है और राहु की दृष्टि उस अग्नि को और अधिक प्रज्वलित कर देती है। जिस प्रकार अग्नि की शिखा ऊँचाई की ओर जाती है, उसी प्रकार भगवान महावीर ऊर्ध्वगमन स्वभाव के कारण लोकशिखर पर विराजमान हो चुके हैं।[3]

शनि की स्थिति से जन्म वर्ष का ज्ञान

यदि हम ज्योतिषीय परिप्रेक्ष्य में देखें तो भगवान महावीर के जन्म को लगभग 2621 वर्ष हो चुके हैं। चाल एवं गति के अनुसार सबसे तेज गति वाला ग्रह चन्द्र है और सबसे मन्द गति वाला ग्रह शनि है। चन्द्रमा एक राशि को पार करने में औसतन ढाई दिन का समय लेता है, जबकि शनि औसतन ढाई वर्ष का समय लेता है। इस प्रकार पूरी बारह राशियों को पार करने में शनि को 30 वर्ष लग जाते हैं। यदि हम 2621 वर्ष में 30 का भाग दें तो 87.33 आता है, जिसका अर्थ है कि भगवान महावीर के जन्म से लेकर अब तक शनि 87 बार पुन: उसी स्थान पर आ चुका है, जहाँ पर उनके जन्म के समय में था और 0.33 का अर्थ है कि जन्म के समय से आज चार राशि आगे होना चाहिए। जन्मांग चक्र में शनि की स्थिति दशम भाव में तुला राशि में है और वर्तमान में यह उससे चार राशि आगे कुम्भ में प्रवेश कर रहे हैं।

सूर्य की स्थिति से माह का ज्ञान

ग्रहों की सामान्य स्थिति के अनुसार सूर्य वैशाख के महीने में मेष राशि में प्रवेश करता है, कभी-कभी चैत्र माह के अन्तिम दिनों में भी सूर्य मेष में प्रवेश करता है और महावीर का जन्म तो चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को ही

हुआ अर्थात् वैशाख आने ही वाला था, अत: सूर्य की स्थिति मेष राशि में है, इसका अर्थ है कि सूर्य के अंश (डिग्री) इस जन्मांग चक्र में न्यून रहे होंगे।

चतुर्थ भाव में सूर्य से समय का ज्ञान

ज्योतिषीय गणना के अनुसार लग्न का सूर्य प्रात:काल के समय होता है और लगभग प्रत्येक दो घण्टे में लग्न की स्थिति बदल जाती है, तदनुसार सूर्य का चतुर्थ भाव में होना यह दर्शाता है कि भगवान महावीर का जन्म मध्यरात्रि में हुआ होगा।

सूर्य एवं चन्द्र की दूरी से तिथि का ज्ञान

सूर्य से चन्द्रमा की दूरी यदि ठीक सातवें भाव में हो तो पूर्णिमा होती है और यदि सूर्य के साथ ही चन्द्रमा हो तो अमावस्या होती है। भगवान महावीर के जन्मांग में सूर्य से चन्द्रमा मात्र छह भाव की दूरी पर स्थित है, अत: उनका जन्म पूर्णिमा से लगभग ढाई दिन पूर्व होना चाहिए।[4]

उपर्युक्त ज्योतिषीय विश्लेषण के अनुसार भगवान महावीर का जन्म शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी के आसपास हुआ होना चाहिए, लेकिन माह चैत्र अथवा वैशाख भी हो सकता है। चूँकि शास्त्रों में कहीं भी वैशाख मास का उल्लेख नहीं मिलता है, अत: चैत्र माह की शुक्ल त्रयोदशी को उनका जन्म मानना अनुचित नहीं है।

अब रही बात उनकी निर्वाण तिथि की, तो उसकी चर्चा तिलोयपण्णत्ती के आधार पर युगारम्भ की कथा से करते हैं।

युगारम्भ तिथि से निर्वाण तिथि का ज्ञान

तिलोयपण्णत्ती ग्रन्थ में कहा गया है कि चतुर्थकाल के समापन में जब 3 वर्ष, 8 माह और 15 दिन शेष रहे, तब भगवान महावीर का निर्वाण हुआ।[5] यदि हम लोकप्रचलित उनकी निर्वाण तिथि कार्तिक कृष्णा अमावस्या में आठ माह और 15 दिन जोड़ते हैं तो यह तिथि श्रावण कृष्णा प्रतिपदा आती है, जो कि पंचमकाल के आरम्भ की तिथि है। न केवल पंचमकाल की, अपितु युगारम्भ की कथा के अनुसार अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी के सभी कालखण्डों के आरम्भ की यही तिथि सिद्ध होती है।

युगारम्भ की वह कथा अक्सर दशलक्षणपर्व के अवसर पर याद की जाती है। डॉ. भारिल्ल कृत 'धर्म के दशलक्षण' में यह इस प्रकार प्राप्त होती है- कालचक्र के परिवर्तन में कुछ स्वाभाविक उतार-चढ़ाव आते हैं, जिन्हें जैन परिभाषा में अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी के नाम से जाना जाता है। अवसर्पिणी में क्रमश: ह्रास और उत्सर्पिणी में क्रमश: विकास होता है। प्रत्येक अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी में छह-छह काल होते हैं।

प्रत्येक अवसर्पिणी काल के अन्त में जब पंचम काल समाप्त और छठा काल आरम्भ होता है तब लोग अनार्यवृत्ति धारण कर हिंसक हो जाते हैं। उसके बाद जब उत्सर्पिणी आरम्भ होती है और धर्मोत्थान का काल पकता है तब श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से सात सप्ताह अर्थात् 49 दिन तक विभिन्न प्रकार की बरसात होती है, जिसके माध्यम से सुकाल पकता है और लोगों में पुन: अहिंसक आर्यवृत्ति का उदय होता है। एक प्रकार से धर्म का उदय होता है, आरम्भ होता है और उसी वातावरण में पर्युषण पर्व की विशेष आराधना की जाती है तथा इसी आधार पर हर उत्सर्पिणी में यह महापर्व चल पड़ता है।[6]

यद्यपि उपर्युक्त कथा से भी यह सिद्ध होता है कि श्रावण कृष्णा प्रतिपदा से 3 वर्ष, 8 माह और 15 दिन पहले कार्तिक की अमावस्या आती है, तथापि इसी तिलोयपण्णत्ती ग्रन्थ में भगवान महावीर की निर्वाण तिथि कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी लिखी हुई है।[7] यद्यपि वहाँ चतुर्दशी लिखी है, किन्तु साथ में ही लिखा है कि उनका निर्वाण प्रत्यूष वेला में हुआ। इससे भी यह सिद्ध होता है कि चतुर्दशी की समाप्ति पर और अमावस्या की प्रारम्भिक वेला में भगवान महावीर का निर्वाण हुआ। उस समय स्वाति नक्षत्र था।

इस सम्बन्ध में ज्ञातव्य है कि हिन्दी तिथियों का आरम्भ सूर्योदय से होता है और यह सूर्योदय देश-देश में

भिन्न समयों पर होने के कारण तिथि में अन्तर आना स्वाभाविक है। यद्यपि चतुर्दशी समाप्त होने जा रही थी, पूर्व में ऊषा की लालिमा छा चुकी थी, सूर्यदेव प्रकट होने ही वाले थे, अमावस की तिथि आने ही वाली थी, तभी भगवान महावीर का निर्वाण हुआ।

सन्धिवेला में निर्वाण

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भगवान महावीर का निर्वाण कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी के अन्त और कार्तिक कृष्णा अमावस्या के प्रारम्भ में सन्धिवेला के समय पर हुआ। कल्पना कीजिए, ऐसे सन्धिकाल में निर्वाण होने पर तत्काल ही यदि उत्सव प्रारम्भ किया जाये तो वह उत्सव अवश्य ही अमावस तिथि में मनाया जायेगा। अत: भगवान महावीर के निर्वाण को अमावस कहना भी अनुचित नहीं है। यद्यपि सम्पूर्ण भारत में इसे कार्तिकी अमावस कहा जाता है, किन्तु गुजराती कैलेण्डर के अनुसार इसे आसोज की अमावस भी कहा जाता है। तिथियों में यह अन्तर किसी प्रकार का विरोध अथवा मतभेद वाली स्थिति न होकर मात्र गुजराती कैलेण्डर के स्वरूप अनुसार ही पाया जाता है। जिस दिन को कार्तिकी अमावस कहा जाता है, उसी दिन को गुजराती भाषा में आसोज की अमावस कहते हैं।

सन्दर्भ

1. आचार्य यतिवृषभ, तिलोयपण्णत्ती, चतुर्थ अधिकार, (सोलापुर : जीवराज ग्रन्थमाला, 1951), पृष्ठ 210
2. मुनि विकर्षसागर, वनराज से जिनराज, (नई दिल्ली : प्रकाशक- कुन्दकुन्दभारती, 1996) पृष्ठ 33
3.. डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन, भगवान महावीर का शिक्षादर्शन, (जयपुर : ज्ञानभारती, 2007), परिशिष्ट।
4. उपर्युक्त सम्पूर्ण विवेचन ज्योतिषीय ग्रहों की गति एवं चाल पर आधारित है।
5. आचार्य यतिवृषभ, तिलोयपण्णत्ती, चतुर्थ अधिकार, (सोलापुर : जीवराज ग्रन्थमाला, 1951), गाथा 1486
6. डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, धर्म के दश लक्षण, (जयपुर : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, 1998) पृष्ठ 12-13
7. आचार्य यतिवृषभ, तिलोयपण्णत्ती, चतुर्थ अधिकार, (सोलापुर : जीवराज ग्रन्थमाला, 1951) गाथा 1209

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भगवान महावीर का शिक्षादर्शन, डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन, ज्ञान भारती, जयपुर, 2007
2. धर्म के दश लक्षण, डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर।
3. तिलोयपण्णत्ती, आचार्य यतिभूषण, जीवराज ग्रन्थमाला, सोलापुर, महाराष्ट्र।
4. चौबीस तीर्थंकर, डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन, सोमैया पब्लिकेशन, मुम्बई।
5. त्रिलोकसार, आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती, जीवराज ग्रन्थमाला, सोलापुर।

-अध्यक्ष, जैन अध्ययन केन्द्र, के.जे. सोमैया इंस्टीट्यूट ऑफ धर्मा स्टडीज, सोमैया विद्याविहार

महावीर का समय प्रबन्धन और कर्म सिद्धान्त

बरख्रा विकास जैन

भगवान महावीर ने गौतम स्वामी को कहा- **'समयं गोयम मा पमायए'** हे गौतम! एक क्षण मात्र का भी प्रमाद नहीं करना। पलक झपकने में जितना वक्त लगता है उतना वक्त भी प्रमाद नहीं करना। प्रभु का यह सन्देश समय की महत्ता दर्शाता है। आज सभी मैनेजमेण्ट गुरु अपनी वर्कशॉप में समय प्रबन्धन पर सबसे ज्यादा जोर देते हैं। समय अनमोल है। कहा जाता है कि खोई सम्पत्ति वापस मिल सकती है, रिश्ते भी वापस मिल सकते हैं, पर समय जाने पर वापस नहीं मिल सकता।

वैज्ञानिकों के शोधानुसार 'कर्मसिद्धान्त' पर आधारित महावीर के सिद्धान्त मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ही नहीं बल्कि हर तरह से जीवन जीने की कला के भी अनुरूप है। प्रभु की शिक्षा की पालना विश्व अंश मात्र भी करने लग जाए तो हम प्रकृति की रक्षा के साथ-साथ ग्लोबल वार्मिंग सहित अनेक समस्याओं से वैश्विक स्तर पर निजात पा सकते हैं।

-4/242 कमला नेहरू नगर, ओल्ड हाउसिंग बोर्ड, पाली-मारवाड़ (राजस्थान)